फरीदा

❑ कप्तान सिंह

समूह -शिक्षण में बच्चों के एक-दूसरे से सीखने का बहुत अधिक महत्व है । स्वभाविक ही इस प्रक्रिया में बड़े बच्चों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । लेकिन शिक्षक को इसके लिए सुचिंतित सायास चेष्टायें करनी होती है । बड़े बच्चों में छोटों के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा करना शिक्षक का दायित्व है । हम इस शब्द चित्र में यह देखेंगे कि इससे खुद शिक्षक को कैसे मदद मिलती है और बड़े बच्चे के व्यक्तित्व का किस तरह विकास होता है ।

लगभग दो वर्ष बाद इन दिनों बन्ध्याली शाला में 'सारस समूह' के बच्चों के साथ काम करने का अवसर मिला । इससे पूर्व मैं इस शाला में दो समूहों (तारा, कोयल) के बच्चों के साथ शिक्षण कार्य कर चुका हूं । इतने अर्से के बाद जब शाला पहुंचा तो पुरानी यादें तो ताजा होना स्वाभाविक था । पास की ढाणी से स्कूल की ओर पैदल आते हुए बच्चों ने मुझे दूर से पहचान लिया था । एक छोटी बालिका तेज स्वर में चिल्लाई भी 'अरे कप्तान जी आग्यो रे'!

बन्ध्याली शाला के आस-पास बहुत खुला-खुला सा अच्छा लगता है । कम लागत से बनी स्कूल की गोलाकार लाल इमारत है जिस पर कोई पक्की छत नहीं, साधारण रूप से छायी हुई सरकण्डों की छान है । इसका अपना अनूठा महत्व है । काफी दिनों बाद जाने पर भी मुझे यहां बहुत सूना-सूना सा लग रहा था। शायद यह गर्मी के मौसम का प्रभाव भी हो सकता है । सर्दी व चौमासे के दिनों में स्कूल के बाहर बड़े मैदान में बच्चों की चहल-पहल, चीख- चिल्लाहट खूब रहती है ।

शाला में पुराने दोस्तों (बच्चों) से मिला । इतने दिनों कहां था? सब बातें की। कई बच्चों ने शिकायतें की । जो बच्चे पहले से ही शर्मीले स्वभाव के थे वे नजरें चुराकर समूह में जा दुबके । जो बच्चे पहले बहुत छोटे लगते थे, अब थोड़े बड़े दिखते थे । जो शरारती बच्चे थे, अब थोड़े गंभीर व समझदार लगे ।

सारस समूह छोटा समूह ही है जिसमें बच्चे भी ज्यादा बड़े नहीं हैं । समूह में छात्र छात्राओं का नामांकन का अनुपात लगभग बराबर-सा ही है । कुल 32 बच्चों के नामांकन वाले इस समूह में कुछ शरारती बच्चे भी हैं जो पूरे स्कूल में अपनी पहचान बनाए हुए हैं । कुछ सीधे सादे भी हैं । 10-12 दिनों में इन बच्चों के साथ काम करते हुए इनके स्वभाव, चेष्टाओं, शरारतों से मैं बखूबी परिचित हुआ । कई तरह के अनुभव हुए। उन्हीं अनुभवों में से एक बालिका के संदर्भ में कुछ का जिक्र इस शब्द चित्र में करना चाहूंगा। इस बालिका का नाम फरीदा है । इस बालिका ने अपने सरल स्वभाव व अन्य बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार के कारण मेरा ध्यान बराबर अपनी ओर खींचा ।

फरीदा सारस समूह की सबसे लम्बी बालिका है । उम्र यही करीब 9-10 वर्ष होगी । उत्सुक व जिज्ञासा प्रवृत्ति की है । चेहरे पर अक्सर मुस्कुराहट के भाव बनाये रखती है । यह बालिका सामान्य-सी पोशाक सलवार-कुर्ती पहनती है जो सामान्यत: लाल व बैंगनी रंग के होते हैं । सिर पर चुन्नी ओढे रहती है ।

सभा के पहले शायद ही कभी फरीदा को मैंने समूहों के अन्य बच्चों के साथ सफाई आदि कार्यों में जुटे देखा हो । यह बालिका नियमित आती है लेकिन मुझे पता चल गया, देरी से आती है । मैंने बच्चों पर बराबर यह ध्यान रखा कि कौन कब आ रहा है और वह सफाई के समय क्या कुछ कर रहा है ।

एक दिन सभा के समय लगभग बच्चे उपस्थित थे । फरीदा अनुपस्थित दिखी, मैंने उसके देरी से आने का कारण जानने का निश्चय किया । मैंने खेल घंटी में उससे अकेले में पूछा, ''तुम स्कूल में अक्सर देरी से क्यों आती हो ?'' फरीदा ने कहा, ''बताऊं कप्तान जी मैं मदरसे में उर्दू सीखने जाती हूं । और वहां से देरी से छूटती हूं तब तक देर हो जाती है ।'' बात सही भी थी । शाला में देरी से आने वाले बच्चों के कारणों में से एक कारण तो यह था ही ।

इस बालिका की उपस्थिति से समूह में काम करते वक्त मैंने यह अनुभव किया कि बच्चे ज्यादा अव्यवस्थित व उच्छृंखल नहीं होते थे । यह बालिका शान्त भाव से अपना काम ध्यानपूर्वक तो करती है, साथ में समूह के अन्य छोटे बच्चों को सिखाने में मदद करती है । इस बालिका को मैंने कभी किसी बच्चे के साथ लडते झगडते, उत्पात मचाते या अव्यवस्था फैलाते नहीं देखा । समूह के नन्हे बच्चों के साथ इसका व्यवहार स्नेहपूर्ण रहता है । इसके कई कारणों में से मुझे इसका एक कारण यह लगा कि फरीदा घर

में भी अपने भाई के छोटे बच्चों को लाड-प्यार से खिलाती रहती है, उन्हें गोद में लिए रहती है । फरीदा को समूह में सबसे बड़ा होने का भान भी है। वह अपने को जिम्मेदारी के भाव से देखती थी । सहयोगी स्वभाव तो उसका था ही ।

शिक्षक की बात को ध्यानपूर्वक सुनना व निर्देशानुसार काम करना उसे सहज लगता था । भाषा में काम करते वक्त मैंने देखा कि फरीदा शिक्षक के नजदीक बैठती है ताकि शिक्षक की निगाह में काम करती रहे और शीघ्र आगे बढ़ सके। वह शिक्षक को कहती है पहले मेरा पाठ सुन। पर समूह में तो शिक्षक को खुद हर एक बच्चे के लिए उपलब्ध होना पड़ता है। समूह में ऐसी व्यवस्था बनानी पड़ती है जिससे शिक्षक हर समय एक ही साथ सब कुछ देख सके कि क्या कुछ हो रहा है ।

इस समूह के बच्चे पर्यावरण अध्ययन में अभी आरंभिक गतिविधियों के स्तर पर ही हैं । एक दिन पर्यावरण अध्ययन के कालांश में पानी और उसके स्रोतों वाली गतिविधि बच्चों को शुरू करवाई । बच्चे गोल घेरा तोडकर अपने शरारती मूड (स्वभाव) में आ गये । इनमें तीन चार बच्चे ही थे जिन्होंने कूद-फाद करना शुरू का था।

मैं परेशान हुआ । मैंने बच्चों से कहा, ''क्या आप मेरे साथ कुछ काम नहीं करना चाहते ?'' इस समूह के बच्चे ना कहना तो जानते ही नहीं । उन्होंने कहा, ''चाहते हैं ।''

शिक्षक: ''फिर तुम अव्यवस्था क्यों फैलाने लगे ?'' बच्चे फिर भी अपनी धुन में मस्त थे । मैं थोडी देर चुप रहा । फरीदा मूक भाव से खडी हुई, यह सब सुन देख रही थी । मैंने कहा ''यदि आप मेरा सहयोग नहीं करोगे तो मैं कोई भी काम तुम्हें कैसे करवा सकता हूं।'' मैंने गतिविधि वहीं पर बंद कर दी । बच्चों को शिक्षक से ऐसी आशा नहीं थी । फरीदा ने सोचा, इससे तो हम सबको नुकसान होगा। उसने बच्चों को पकडकर घेरे में व्यवस्थित किया। प्रत्येक से बातें की । तुम कप्तान जी को काम नहीं करवाने दोगे। वह गुस्से में थी । अनिल, सद्दाम, गणेश आदि बच्चों को उसने पुन: खींचा और अपने स्थान पर बिठाया । फिर आग्रह के भाव से ही मेरी तरफ देखकर कहा ''तुम काम करवाओ कप्तान जी, अब कोई शैतानी नहीं करेगा ।''

इस घटना से मुझे लगा कि फरीदा समूह में अपनी क्या भूमिका रखती है । उसने कहां तक किस तरह से समूह में बडी होने के नाते जिम्मेवारी का निर्वाह किया । समूह में बच्चों के बीच काम करने हेतु व्यवस्था का बनाना जरूरी होता है । नहीं तो शिक्षक काम नहीं करवा पायेगा । पर सवाल उठता है कि हम कौनसी व्यवस्था चाहते हैं ? चेतन व्यवस्था जिसे हमेशा से सम्मान मिलता आया है या फिर अचेतन व्यवस्था जो ऊपरी तौर पर देखने में अव्यवस्था का आभास देती है। यहां मैं सिल्विया एश्टन वार्नर को उदधृत करूं तो वे कहती हैं, व्यवस्था को तीन चीजें बनाती हैं, शिक्षक का व्यक्तित्व, बच्चों का व्यक्तित्व, और सिखाने का तरीका। पता नहीं यहां कौनसा तत्व प्रमुख था ।

एक दिन अंग्रेजी के अंतिम कालांश में मैं समूह में पहुंचा । मैंने देखा सभी नन्हे बच्चे सोने का बहाना करके आंख बंद करके लेटे हुए हैं । मुझे इन बच्चों की अनेक शरारतों का पता था । मैंने अपनी जगह पर बैठते हुए कहा, ''अच्छा सभी बच्चे बहुत थक गये हैं तभी इनको नींद आ गई है ।'' इतने में हंसी का फव्वारा फूटा और सभी बच्चे एक साथ उठ बैठे । इस दिन इस कालांश में 'दिस', 'दीज' के प्रयोग पर एक गतिविधि करवाई गई । जिसमें बालक से समूह के बीच जाकर रखी हुई चीजों में से कोई एक चीज के बारे में अंग्रेजी में बोलना था ।

अनेक चाबियों के गुच्छे को लेकर एक बालक जिसकी आंख पर पट्टी बंधी थी कहा, 'दिस इज ए की' । फरीदा झट से इस बालक की गलती को ताड गई थी कि उसने एक से अधिक (बहु वचन) के लिए 'दीज' का प्रयोग नहीं किया। उसने बोला 'दीज आर कीज' (ये चाबिया हैं ।) । अन्य बच्चों को अभी भी इस बच्चे की गलती का पता नहीं चला था । 'मीनिंग' (शब्द) का उच्चारण और बताई गई चीज का अंग्रेजी में नाम याद रख पाने की क्षमता इस बालिका में मुझे अधिक दिखती थी ।

खेल घंटी में भी यह बालिका अक्सर अपने काम में जुटी हुई देखी गई। छुट्टी में घर जाते समय भी शिक्षक से कई बार घर के लिए काम या पढ़ने के लिए पुस्तकों की मांग करती है । इससे लगता है वह अध्ययनशील तो है ही ।

फरीदा की रुचि पढ़ने के साथ-साथ खेलों में भी है । एक दिन मैंने देखा, समूह में फरीदा अपनी मित्र परवीना (जिसके साथ यह हर समय रहती है) के साथ कंकड खेल रही थी । अन्य बच्चे भी मिट्टी की गोलियों, कांच की गोलियों से खेलने लगे । मैंने सोचा

बच्चे खलने लगे तो काम कैसे होगा । मैंने फरीदा को कहा, क्या यह खेलने का समय है ? लाओ मुझे दो कंकड । मैने ये सफेद चिकने व चौकोर कंकड उसके हाथ से यह कहते हुए ले लिए कि घर जाओ तब लेते जाना । उस दिन के बाद समूह में काम के वक्त पर फरीदा को मैने कभी उन चिकने गुटकों से खेलते हुए नहीं देखा। हां बाहर मैदान में चिलकती धूप में यह बच्चों के साथ कई बार इक टंगरी (लंगडी टांग से कूदकर घर बसाने वाला खेल) खेलते हुए देखी गयी। काफी देर बाद घर की ओर लौटती । एक दिन समूह में छुट्टी के बाद बच्चे अपनी सामग्री को इधर उधर बिखरी हुई व अव्यवस्थित ही छोड गये । फरीदा ने यह सब देखा। थोड़ा सोचा, सामग्री समेटने लगी, दरियों को तह करने में शिक्षक की मदद की। समूह के बाहर लगे चित्र प्रदर्शन वाले छोटे पिन बोर्ड को अन्दर रखा और मेरे से कहा, ''कल सभा में बात करुंगी।''

दूसरे दिन बच्चों को छुट्टी से पहले उसने हिदायत दी। वे अपनी बारी पर सामान को ठीक ढंग से व्यवस्थित करके जायें । बच्चे ऐसा करके गये भी ।

बच्चों के उच्छृंखल व्यवहार को फरीदा एक हद तक सहन करती है । एक दिन अनिल (पूरे स्कूल में पहचाना जाने वाला बालक) मोबीन आदि अन्य छोटे बच्चों को परेशान कर रहा था और काम के समय धींगा-मस्ती कर रहा था । अनिल से बात करने पर भी वह नहीं माना। फरीदा को यह सहन नहीं हुआ । दो तीन अन्य बच्चों को साथ लिया । इस बच्चे को वे चारों हाथ पैर पकडकर झुलाते हुए कार्यालय में पटक आये थे । बालकों की छोटी मोटी गलतियों को यह बालिका सहज भाव से माफ कर देती है ।

एक दिन समूह में अनिल हंसीरा को पीटने लगा । गणेश ने सद्दाम के सिर पर मिट्टी की गोली उछाली । सद्दाम ने शोएब के उधर उसे फैंका । इसी फेंका फेंकी के खेल में एक कंकड फरीदा के सिर पर उछाला पर उसने इस छोटे शोएब को उसकी गलती के लिए माफ कर दिया था । इसके बाद सभी बच्चे व्यवस्थित बैठ गये थे । फरीदा ऐसी क्यों है ? अन्य बच्चों के लिए उसका व्यवहार मुझे प्रेरणादायी क्यों लगता है ? यह एक प्रश्न उठता है । इसका कारण मुझे यह लगा कि वह सोचती है यदि समूह में अन्य बच्चों को व्यवधान पैदा करूंगी तो अन्य बच्चों का नुकसान तो होगा ही। वे भी ऐसा करने लग जायेंगे। वह अपने समूह में पढ़ाई होते रहना देखना चाहती है । शिक्षक से लगाव, छोटे बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार उसका स्वभाव है । फरीदा की एक अन्य बहिन समीना और एक भाई इस शाला में पढ़ते हैं वह उनकी तरह पढ़ना चाहती है । फरीदा के अभिभावक भी बच्चों की शिक्षा को बहुत महत्व देते हैं । घर आये शिक्षकों से बच्चों की पढ़ाई से संबंधित बातचीत करते हैं । विद्यालय के प्रति उनकी सकारात्मक सोच है । फरीदा के पारिवारिक वातावरण में शैक्षिक माहौल है । फरीदा के माता पिता सीधे व सरल स्वभाव के हैं जो कि मकानों की छत्त डालने में प्रयोग की जाने वाली लकड़ी का काम करते हैं । अभिभावकों से बातचीत से पता चला कि फरीदा कभी-कभार स्कूल इसलिए नहीं आ पाती कि उसे घर पर छोटे बच्चे को रखना पड़ता है । वैसे वे फरीदा को कभी स्कूल जाने से रोकते नहीं। शाला समय के बाद फरीदा घर के काम में हाथ बंटाती है। मां बाप भी फरीदा को बहुत स्नेह देते हैं । पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं । शिक्षकों से लगाव छोटे बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार शान्त व सरल स्वभाव फरीदा के पारिवारिक संस्कारों में हैं। ◆